Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 16/03/2020 Accepted on : 27/03/2020 Publication Date: 31/03/2020

भारत में शिक्षक शिक्षा: कुछ नीतिगत मुद्दे और चुनौतियां

Chaudhari Jayshriben Gulabbhai
Adhyapak sahayak,
Shree P.D.Malaviya Graduate Teachers College, Rajkot.

सारांश : शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए एक कुंजी है। और यहां शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है कि शिक्षकों की प्रेरणा गुणवत्ता शिक्षा और सीखने की उपलब्धि के लिए जिम्मेदार कारक क्या है। शिक्षकों का उत्पादन करना शिक्षकों के लिए एक बड़ी चुनौती है। आज ज्ञान की चंचलता की मात्रा के साथ, शिक्षक के शौक को हल के नए शैक्षणिक और पेचीदा सिद्धांतों, दर्शन, समाजशास्त्र और वैश्वीकरण में अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया है। आज की योजना बनाई और कल्पनाशील शिक्षक कार्यक्रम की आवश्यकता है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम आज के समय में समीक्षित, सुधारित, और पुनर्जन्म के जैसे शिक्षक शिक्षा में सुधार एक आयामी कार्य है।हर देश के लिए एक अच्छी तरह से तैयार और प्रभावी शिक्षक प्रदान करना एक चुनौती है।यहां अपमानजनक घाटी और सवालों के उद्देश्य और लक्ष्य को खत्म करने के लिए चिंता का विषय है। सामाजिकता के लिए शिक्षा, और यहां एक अनुसंधान समस्या है जिसमें शिक्षा शामिल है इस मुद्दे को सुधारने और पुनर्गठन और परिवर्तन की नीति और दस्तावेजों की रोशनी में कोठारी आयोग की रिपोर्ट 1964-66 अचरा राममूर्ति समाज रिपोर्ट 1990 एनसीएफ 2005 राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की रिपोर्ट, अधिकार अधिनियम 2009, एनसीटीई रेगुलेशन 2009, एनसीटीईएफ 2010 आदि शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम और विनियमो हाल के वर्षों में एक व्यापक बदलाव देखा गया है। जब भी कुछ समस्याएं आई है जैसे अद्यतन पाठ्यक्रम, अवधी और इंटरशिप की गुणवत्ता, in-service शिक्षक शिक्षा, व्यवहारिक मस्लो की कमी और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षक शिक्षा का विषय एक बहस का विषय बन गया है। इसीलिए यहां शिक्षक शिक्षा के लिए कुछ नीतियों, समस्याओ और शिक्षा के लिए प्रस्तावित सुझावों से संबंधित कुछ मुद्दों को प्रस्तावित किया गया है।

संकेत शब्द: शिक्षा, शिक्षक शिक्षा, मुद्दे, चुनौतियां ।

1. प्रस्तावना:

यहां संवर्धित है कि समावेशी शिक्षा प्रणाली के विकास में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है।शिक्षा के लिए सार्थक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक प्रेरित, योग्य और प्रशिक्षित शिक्षक महत्वपूर्ण कारक है।

१. शिक्षक शिक्षा,शिक्षकों की दक्षता और क्षमता के विकास की प्रक्रिया है जो वर्तमान समय में पेशे की आवश्यकताऔ और चुनौतियों को पूरा करने के लिए सक्षम और सशक्त बनाती है। Goods dictionary of education explains-"शिक्षक शिक्षा का मतलब सभी औपचारिक और गैर औपचारिक गतिविधियों और अनुभवों से है जो किसी व्यक्ति को शैक्षिक पेशे के सदस्य की जिम्मेदारियों को संभालने या उसकी जिम्मेदारियों को अधिक प्रभावी ढंग से निर्वहन करने के लिए योग्य बनाने में मदद करते हैं।"

W.H cliPatrickने शिक्षक प्रशिक्षण को यह बताते हुए कहा कि प्रशिक्षण जानवरों और सर्कस कलाकारों को दिया जाता है, जबकि शिक्षा मनुष्य को दी जाती है। शिक्षक शिक्षा मे शिक्षण कौशल, संतवाणी शैक्षणिक सिद्धांत और पेशेवर कौशल शामिल है।

"शिक्षक शिक्षा=शिक्षण कौशल+शैक्षणिक सिद्धांत प्+व्यावसायिक कौशल"

अच्छे गुणों को शिक्षक के अंदर दाखिल करने के लिए एक सर्वेक्षण शिक्षकों के रूप में-निष्पक्षता, रचनात्मकता, और नेतृत्व का प्यार, अच्छे शिक्षकों के लिए यहां सभी बातें बहुत ही महत्वपूर्ण है इसके अलावा चरित्र की ताकत, और ईमानदारी के साथ शिक्षक को अपनी शिक्षा के प्रति निष्ठावान होना चाहिए। शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए कुछ देशों ने शिक्षण मानकों को विकसित किया है उदाहरण के लिए-ऑस्ट्रेलिया, ने 2010 मैं शिक्षकों के लिए मानक विकसित किए और शिक्षक के फ्री डोमेन और शिक्षा सेवा ऑस्ट्रेलिया 2011 मैं उल्लिखित साथ मानकों को अंतिम रूप दिया, जो नीचे दिए गए हैं:
१. छात्रों को जाने और वह कैसे सीखते हैं,

२. सामग्री और इसे कैसे पढ़ाया जाए, व्यवसाई का अभ्यास,
३. प्रभावी शिक्षण और प्रशिक्षण के लिए योजना बनाई और उसे लागू करें,
४. मूल्यांकन करें,
५. छात्र सीखने पर प्रतिक्रिया और रिपोर्ट प्रदान करें, व्यावसायिक जुड़ाव,
६. पेशेवर सीखने में व्यस्त रहे,
७. सहकर्मीयो/माता -पिता/देखभाल करने वालों के साथ पेशेवर रूप से जुड़ाव और सामुदायिक शिक्षा।
भविष्य मे शिक्षकों के भीतर इन सभी व्यावसायिक गुणों को विकसित करना अत्यधिक आवश्यक है।

2.भारतीय शिक्षा संस्थान में शिक्षक शिक्षा और इसके विकास के दायरे

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के लिए कई समितियों और आयोगों एवं दस्तावेजों और नीति पत्रों को समय पर तैयार किया गया और शिक्षक शिक्षा सहित शिक्षा के हर पहलू में प्रगति और उपलब्धियों की समीक्षा और सुझाव देने के लिए शिक्षा को आदमी लाया गया। जैसे कि

University education commission (1948-49): विश्वविद्यालय 1948-49 स्वतंत्र भारत में यह पंच स्थापित किया गया था।यह गंभीर रूप से झांसी जाने वाली लचीली और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल है। इस कमीशन में सिफारिश की गई है कि शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम को फिर से तैयार किया जाना चाहिए,व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त स्कूल और स्कूल अभ्यास के लिए अधिक समय दिया जाना चाहिए, और "शिक्षक शिक्षा" शब्द की जगह"शिक्षक प्रशिक्षण"शब्द दिया जाना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में मौजूदा पाठ्यक्रम और सुझाव को इन पाठ्यक्रमों में होना चाहिए।

Education commission of (1964-66): शिक्षा के लिए शिक्षा आयोग कोठारी आयोग ने देखा कि राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षक शिक्षा के सभी स्तर पर शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों के लिए व्यवसायिक शिक्षा का एक ध्वनि कार्यक्रम अति आवश्यक है।

Teacher education in different five year plans:

विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में शिक्षक शिक्षा पांचवी पंचवर्षीय योजनाओं में हजारों प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षकों को सेवा कार्यक्रमों के रूप में पत्राचार पाठ्यक्रम प्रदान किए गए हैं। इसके अलावा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, जयपुर विश्वविद्यालय और ऐसे कई दक्षिण भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा एनसीईआरटी की सहायता से पत्राचार कार्यक्रम को शुरू किया गया था। एनसीईआरटी की सहायता से क्षेत्रीय कॉलेजों अजमेर, मैसूर, भुवनेश्वर और भोपाल में शुरू किए गए हैं। एनसीटी अधिनियम 1993मैं संसद द्वारा पारित किया गया था कि एनसीटीई को देश की शिक्षा की देखभाल की जिम्मेदारी दी गई है। 11वीं योजना शिक्षा क्षेत्र के लिए एक बढ़ावा थी। इसमें ध्यान केंद्रित किया गया कि,
१. एससी /एसटी और अल्पसंख्यक क्षेत्रों में शिक्षक शिक्षा क्षमता को बढ़ावा देना,
२. शिक्षक शिक्षा को मजबूत करना,
३ प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षक का व्यावसायिक विकास करना,
३. शिक्षक शिक्षा में प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना,
४. उच्च शिक्षा के साथ प्राथमिक शिक्षक शिक्षा को एकीकृत करना,
५ 12वी पंचवर्षीय योजना मेंव्यवसायिक शिक्षा के लिए नई तकनीक और उसके लिए अनुकूल क्षमता के रूप में शिक्षा को बढ़ावा देना और शिक्षक शिक्षा में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने के लिए आगे बढ़ना।
६ इन प्रयासों से राष्ट्र में शिक्षक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण विकास करना।

इसके अलावा Ford foundation turbo 1954, pears commity 1956 , national policy statement on education 1968, first Asian conference on teacher education 1971 efforts of Indian association of teacher education (IASE), national commission on teachers-I (for school teachers)1983-85, the national policy of education NPE, आचार्य राममूर्ति कमेटी 1990, यशपाल कमिटी 1993, द नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क 2005, नेशनल नॉलेज कमीशन 2007, नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन ncefte 2010 आदि शिक्षण की संस्थाओं ने अपने नीति नियमों से शिक्षक शिक्षा को आगे बढ़ाने में सहायता की है।लेकिन पिछले दो दशकों के दौरान यह महसूस किया गया है कि वैश्विक परिदृश्य क्षेत्र में नई चुनौतियां पेश कर रहा है। इनमें से कुछ चुनौतियां नीचे सूचीबद्ध की गई है-

3. शिक्षक शिक्षा की चुनौतियां-

✓अपर्याप्त गुणवत्ता अनुसंधान
✓अपर्याप्त बुनियादी ढांचा
✓आपूर्ति संचालित प्रणाली
✓भावी शिक्षकों की खराब प्रेरणा
✓गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की कमी

यहां सभी शिक्षक शिक्षा की प्रमुख समस्याएं है।

3.1 गरीब जीवन कौशल का एकीकरण:

तकनीकी शैक्षणिक कौशल, सूचना प्रेमी कौशल, भावनात्मक कौशल,विकासात्मक कौशल और आध्यात्मिक कौशल के रूप में कुछ कौशल को शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में एकीकृत करने की आवश्यकता है। इसके लिए रचनात्मक सोच, महत्वपूर्ण सोच, स्वयं और सामाजिक प्रबंधन कौशल पर एक साथ ध्यान केंद्रित करना खूब आवश्यक है।वर्तमान समय में शिक्षक शिक्षा प्रणाली इन कौशल को शिक्षार्थियों के भीतर एकीकृत करने में विफल रहती है।

3.2 छोटी अवधि का शिक्षक प्रशिक्षण:

छोटी अवधि के शिक्षण में शिक्षक प्रशिक्षण दीया जाना भारत में यह सुनिश्चित करता है कि यह अवधि स्नातक होने के 1 साल बाद की होती है और अंत के सत्र में प्रभावी शिक्षा 6 से 7 कार्य महीने की स्वस्थ दृष्टिकोण,मूल्यों और बहुआयामी रुचि को विकसित करने के लिए अति आवश्यक है लेकिन उनमें कमी दिखाई दे रही है। इस समस्या को दूर करने के लिए एनसीटीए ने इस अवधि को 2015 से 2 साल के लिए बढ़ा दिया है इस कदम से कुछ सकारात्मक और नकारात्मक पर प्रभाव दिखाई दे रहे हैं लेकिन अंतिम परिणाम अभी तक आना बाकी है लेकिन अभी भी यह विवाद चल रहा है इसीलिए पहले बेंच के पूरा होने से पहले की अवधि के बारे में सुझाव आमंत्रित करने के लिए एनसीटीई का हालांकि सर्वेक्षण एक अजीब और अप्रत्याशित कदम है।

3.3 अनुच्छेद और अपर्याप्त अभ्यास शिक्षण:

अनुच्छेद और अपर्याप्त अभ्यास शिक्षण की बात करें तो आमतौर पर अभ्यास शिक्षण को गंभीरता से और पेशेवर रूप से पुतली शिक्षकों द्वारा नहीं दिया जाना चाहिए।विशेष रूप से कई निजी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में और कर्तव्य की भावना की कमी के कारण और वे गैर जिम्मेदार, उद्देश्य हिन बच्चे बने रहते हैंयही कारण है कि शिक्षा के विकास में और शैक्षणिक कौशल में बाधा आ रही है।

3.4 विषय विज्ञान कार्यक्रम:

विषय ज्ञान कार्यक्रम की बात करें तो b.Ed का कार्यक्रम मूल विषय के ज्ञान पर जोर नहीं देता है।यहां शिक्षण कौशल के साथ-साथ विकसित या विषय ग्राम सुनिश्चित करना चाहिए कि यह कार्यक्रम मूल रूप से विद्यार्थियों को ज्ञान दे रहा है कि नहीं। इसके बीना विषय ज्ञान के संदर्भ में या संबंध में शिक्षण अभ्यास कुछ हद तक प्रभावी रहेगा।

3.5 अपूर्ण पर्यवेक्षण और प्रतिक्रिया:

अपूर्ण पर्यवेक्षण उचित पर्यवेक्षण के साथ युग्मित पर्यवेक्षण पुतली शिक्षकों के अभ्यास संबंधी और शिक्षण गतिविधि में सुधार के लिए उपयोगी है। प्रतिक्रिया और समर्थन उन्हें कक्षा का सामना करने के लिए आत्मा विश्वास विकसित करने में मदद करता है।पाठों की योजना बनाने में और सामग्री व्यवस्थित करने के लिए सीखने और अन्य कक्षा कौशल विकसित करने के लिए मार्गदर्शन अति आवश्यक है।लेकिन वास्तव में पाठ योजनाओं को सतही रूप में जाना जाता है और विषय पद्धति के स्वामी द्वारा कोई सार्थक चर्चा नहीं की जाती है।

3.6 तटस्थ शिक्षण के अनुचित तरीके:

तटस्थ शिक्षण के अनुचित तरीके के अंदर भारत में शिक्षक अपने शिक्षण में नवीन विधियों और प्रयोग को अपनाने के लिए उदासीन है। आधुनिक क्लासरूम प्रौद्योगिकियों और प्रवाह कत आईसीटी तकनीकों के साथ उनका परिचय खराब है।

3.7 विकास कार्यक्रमों में पेशेवर और आवश्यक बुनियादी ढांचे की कमी:

शिक्षा के कार्यक्रमों में अधिकांश यह देखा गया है कि कार्यक्रमों में पेशेवर और आवश्यक बुनियादी ढांचे की कमी का सामना शिक्षा में शामिल शिक्षकों को करना पड़ता है।इसके परिणाम स्वरूप और संतोषजनक पेशेवर विद्वानों का परिणाम होता है।भारत में कई शिक्षक शिक्षा संस्थान उचित सुविधाओं के बिना और प्रयोगात्मक स्कूल, पुस्तकालय, कंप्यूटर और अन्य आईसीटी उपकरणों के बिना किराए के भवनों में संचालित शिक्षा को बढ़ावा देते हैं जो आवश्यक नहीं है एक अच्छे शिक्षक शिक्षा विभाग के संचालन के लिए छात्र के लिए अलग से छात्रावास की कोई सुविधा पर्याप्त नहीं करता है। विशेष रूप से कुछ संस्थानों और विस्तार पर परिसरों में 11वीं योजनाओं के दौरान शापित कुछ विश्वविद्यालयों के क्षेत्रीय केंद्र, सामग्री, बुनियादी ढांचे, उपकरणों और शिक्षकों की कठिनाई का सामना छात्र कर रहा है। यहां अति गंभीर बाबत है

3.8 अपर्याप्त सह- पाठ्यक्रम गतिविधियां:

वर्तमान में अधिकतर ध्यान पाठ्यक्रम को पूरा करने में केंद्रित करते हैं। और विशेष रूप से निजी संस्थानों में एनसीसी, एनएसएस, शैक्षिक की यात्राओं आदि जैसे सुनियोजित सह पाठयक्रम गतिविधियों के लिए कोई जगह नहीं है।

इसके अलावा शिक्षा की चुनौतियों में अपर्याप्त अनुभवजन्य अनुसंधान भारत में शैक्षिक अनुसंधान को आयोजित किया जाता है, पुतली शिक्षकों की प्रेरणा और शैक्षिक पृष्ठभूमि का अभाव, शिक्षा की मांग और आपूर्ति में कमी, गरीबों के बजट में आवंटन आदि समस्याओं का सामना शिक्षा के क्षेत्र में किया जाता है।

4. चुनौतियों का समाधान करने के लिए उपाय:

✓बदलती जरूरतों और समाज के नवीनतम विकास के लिए शिक्षक के पेशे के अनुसार पाठ्यक्रम कार्यक्रम में समय-समय पर अद्यतन को समय-समय पर संशोधित किया जाना चाहिए।

✓राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने सुझाव दिया है कि शिक्षक शिक्षण संस्थानों को शिक्षक,छात्रों और अच्छे बुनियादी ढांचे आदि के प्रावधानों के चयन के लिए इस नियामक संस्था के सख्त नियंत्रण में रखा जाना चाहिए। और काम करने वाले संस्थानों की समय-समय पर जांच करनी चाहिए। इसके अलावा अगर उन्हें अपेक्षित स्तर तक आने में असफल हो रहे हो तो शिक्षा की संस्थानों को उचित निगरानी में रखना चाहिए।इस प्रकार के संस्थानों को डिग्री उत्पादक कारखाने बनने से रोकना चाहिए।दूसरी ओर सरकार और अन्य के संचालन को विनियमित करना चाहिए।

✓मूल्य शिक्षा पर तनाव प्रबंधन के लिए शिक्षकों को प्रबंधन और मूल्य शिक्षा के बारे में किया जाना चाहिए। ताकि वे छात्रों को तनाव के प्रबंधन और सामाजिक अलगाव, माता पिता के दबाव और गले की प्रतिस्पर्धा के इस समय में खुद को बनाए रखने में मदद कर सके और वह युवा मन की दिशा में अपने आप को शिक्षित कर उचित मूल्यों का प्रधान अपने अंदर कर सकें।

✓क्रिटिकल विचार को उच्च क्रम की सोच के शीर्ष संशोधित उद्देश्यों में रखा गया है क्योंकि रचनात्मकता का विकास मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षकों को गंभीर रूप से सोचने और सही निर्णय लेने और दूसरों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षकों को ज्ञान के निर्माण के लिए छात्र की क्षमता को प्रोत्साहित करना चाहिए।

✓जीवन कौशल का विकास और संवर्धन के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों से शिक्षकों को विद्यार्थियों के जीवन कौशल को विकसित करने में सक्षम होना चाहिए।शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत विकास और वृद्धि के लिए जीवन कौशल आवश्यक है। यह कौशल मनुष्य को जीवन की कठिनाइयों और प्रतिकूलताओ से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम बनाते हैं। इंक अक्षरों में थिंकिंग स्किल सेल्फ, अवेयरनेस ,प्रॉब्लम सॉल्विंग, क्रिएटिव थिंकिंग, डिसीजन मेकिंग और क्रिटिकल थिंकिंग एवं सोशल स्किल्स के अंदर इंटरपर्सनल रिलेशनशिप, इफेक्टिव कम्युनिकेशन और समानुभूति और इमोशनल स्किल्स के अंदर स्ट्रेस मैनेजमेंट को बढ़ावा देना चाहिए।

✓प्रदर्शन स्कूलों का प्रावधान यह चीजों की फिटनेस में होगा कि यदि शिक्षक शिक्षा विभाग की स्थापना के समय, एक प्रदर्शन स्कूल को इसका एक अभिन्न अंग बनाया जाता है और कुछ निश्चित सुविधाओं जैसे की प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों के लिए एक निश्चित नामांकन का पालन किया जाना चाहिए। और अन्य महत्वपूर्ण दृश्य श्रव्य उपकरण को दिखाया जाना चाहिए।

✓शिक्षक शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के लिए पत्राचार शिक्षक, पत्राचार पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जानी चाहिए।

✓शिक्षा पत्राचार कार्यक्रम में शांति शिक्षा जैसे विकल्पों की सत्यता और वर्तमान में एनसीईआरटी प्रस्ताव के लिए शांति शिक्षा और शैक्षिक शिक्षा प्रबंधकीय और एन यू ई पी ए जैसे पाठ्यक्रम में स्कूल मैनेजमेंट में एक महत्वपूर्ण तरीका है।

✓सुंदरीकरण और पुस्तकालय सुविधाओं लाइब्रेरी स्कोर डिजिटल लाइब्रेरी सुविधाओं की एक विस्तृत शुक्ला के साथ ई- जौनल, ऑनलाइन नव स्क्रिप्शन के साथ सुसज्जित संपूर्ण और व्यापक संदर्भ के अनुभाग समान समृद्ध करने की आवश्यकता होनी चाहिए।

5.उपसंहार:

उचित योग्यता वाले शिक्षकों को विकसित करने के लिए व्यापक हो जाता है कि जब एक राष्ट्र दीक्षा व्यक्तियों को शिक्षा देने का आश्वासन देता है तब स्थाई वैश्विक कामकाजी के लिए गुणवत्ता युक्त शिक्षण अति आवश्यक है।प्राथमिक शिक्षा के लिए यूनेस्को इंस्टिट्यूट शायरी सांख्यिकी के अनुसार शिक्षकों की मांग को 258 मिलियन तक ले जाने की उम्मीद है। एजेंडा सुईमाबी विकास क्रम ४ का नेतृत्व करने और समन्वय करने की उम्मीद है। शिक्षा 2030 फ्रेमवर्क के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा शिक्षकों को पर्याप्त वृद्धि का आवाहन कराती है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 जैसी अनुपस्थित श्रेणी संबंधी दिशा निर्देश भारत की प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा पर जोर दिया गया है क्योंकि शिक्षकों की गुणवत्ता के बिना कोई भी शिक्षा प्रणाली में सुधार नहीं हो सकता है पर्याप्त सुधार लाने के लिए कठोर पुत्रों की आवश्यकता नहीं है।हाल के वर्षों में केंद्रीय राज्य शिक्षक पात्रता परीक्षा के लिए उपस्थित होने वाले संभावित राशियों में से कोई भी बड़ा नहीं दिखा गया है।एक शिक्षक से अपेक्षित सबसे बुनियादी ग्रहण आधार को व्यक्त करने में विफल रहता है यह दर्शाता है कि कुछ बुनियादी समस्याएं हैं सिस्टम के साथ जो मुझे ध्यान देना चाहिए कि हम शिक्षक शिक्षा की समस्याओं के लिए एक अच्छी खोज कर रहे हैं।हालांकि हाल के दशकों के दौरान कई प्रकार की समितियों और नीति दस्तावेजों ने शिक्षक शिक्षा मैं तत्काल सुधार के लिए कई सुझाव और सिफारिशों की मांग की है लेकिन इनमें से अधिकांश प्रस्ताव को अभी तक लागू नहीं किया गया है।क्योंकि शिक्षकों की मांग हाल के दिनों में बड़ी है और विभिन्न स्तरों पर शिक्षक शिक्षा संस्थानों और ब्राह्मणों की संख्या में विस्फोट हुआ है इसलिए इसे बुनियादी ढांचे में सुधार के साथ जोड़ा नहीं गया है । संकाय विशेषज्ञता, नीति और व्यवहारिक स्तरों पर संसाधनों या गुणवत्ता को अधिकतर अंतर को बनने के लिए हमें बहुत कुछ करना होगा और केंद्र सरकार, विश्वविद्यालयों की एनसीटीई, यूजीसी, एनसीईआरटी, एनयूपीए, इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन एजुकेशन जैसे सांविधिक निकायों को शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक शिक्षा गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए अधिक लाभों को लाना अति आवश्यक है।

संदर्भ:

1. एन यू ई पी ए, (2011) भारत में शिक्षक और शिक्षण। कंसोर्सियम फॉर रिसर्च ऑन एजुकेशन एक्सेस, ट्रांजैक्शन एंड इक्विटी । भारत नीति संक्षिप्त नं.५
2. सरकार (2009) ग्रहण आयोग, राष्ट्र को रिपोर्ट। 14.11.2016 को knowledgecommissionarchive.nic.in/downloads/report 2009/eng/report09.pdf से लिया गया।
3. देसाई ए.जे,(2012) भारत में शिक्षक शिक्षा की समस्याएं। इंटरनेशनल जनरल फॉर रिसर्च इन एजुकेशन। (1) पृष्ठ हो 54-58